धुर्जटी प्रसाद मुखर्जी (डी. पी. मुखर्जी)

आपकी ख्याति एक मार्क्सवादी विचारक के रूप में रही है।

मार्क्सवाद को विश्लेषण की प्रणाली के रूप में स्वीकार किया है न कि एक राजनीतिक आदर्शवाद के रूप में ।

आपकी पुस्तक " इंट्रोडक्शन टू दी इंडियन म्यूजिक" एक समाजशास्त्रीय वर्णन है जिसकी तुलना मैक्स वेबर की "सोशल एंड नेशनल फाउंडेशन ऑफ म्यूजिक" से की जा सकती है।

डी. पी. मुखर्जी समाजशास्त्र में अन्य विषयों की भांति जमीन भी हैं, और छत भी।

डी. पी. मुखर्जी ने कहा है कि भारतीय समाजशास्त्र के दो उपागमो से विश्लेषण का प्रयास करना होगा-

1- तुलनात्मक उपागम,

2- प्रतीकों व मूल्यों का परीक्षण।

डी .पी. मुखर्जी हमारी मनुष्य की अवधारणा पुरुष की है, व्यक्ति कि नहीं।

डी .पी .मुखर्जी के अनुसार परंपरा का मूल शब्द वाहक है जिसका अर्थ है संप्रेषण/ संस्कृत भाषा में अर्थ उत्तराधिकार।

भारतीय परंपरा में परिवर्तन के तीन सिद्धांत मान्य है --

1-श्रुति

2-स्मृति

3-अनुभव ।

अनुभव या व्यैक्तिक अनुभव क्रांतिकारी सिद्धांत है।

डी.पी. मुखर्जी परंपराओं की पूजा नहीं की। उनका पूर्ण व्यक्ति अथवा संतुलित व्यक्ति से तात्पर्य था जिसमें - नैतिक जोश व सुरुचिपूर्ण गुण तथा बौद्धिकता का मिश्रण हो।

इतिहास व तार्किकता का बोध हो।

डी. पी. मुखर्जी का प्रमुख योगदान परंपराओं की भूमिकाओं का सैद्धांतिक रूपांतरण है। इससे सामाजिक परिवर्तन का विश्लेषण किया जा सकेगा ।

डी. पी. मुखर्जी का मत है कि भारतीय सामाजिक वास्तविकता का सही मूल्यांकन उसकी विशेष परंपरा विशिष्ट तरीकों व संस्कृति के विभिन्न प्रतिमाओं व सामाजिक क्रियाओं से ही होता है।

डी.पी. मुखर्जी ने भारतीय इतिहास का द्वंदात्मक प्रक्रिया द्वारा विश्लेषण किया है । उनके अनुसार परंपरा तथा आधुनिकता उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद व्यक्तिवाद और समूहवाद में द्वंदात्मक संबंध है। ये एक दूसरे को प्रभावित करते तथा होते हैं ।

डी. पी. मुखर्जी का द्वन्द्ववाद का आधार मानवतावाद रहा है , जो संकुचित नृजातीय एवं राष्ट्रीय विचारों की सीमाओं से अलग था ।

डी. पी. मुखर्जी ने भारतीय समाज के अध्ययन के लिए परंपराओं के अध्ययन को आवश्यक बताया है।

डी. पी. मुखर्जी ने सामाजिक विज्ञान में संक्षिप्तीकरण और विभागीकरण की प्रवृत्ति को अस्वीकार किया है।

डी. पी. मुखर्जी भारतीय समाज की प्रक्रियाओं के विश्लेषण में हीगल (विचारों का द्वन्द्व) और मार्क्स (भौतिक पदार्थों का द्वन्द्व)दोनों के द्वन्द्ववादी धारणा से भिन्न द्वंदात्मकता का प्रयोग परंपराओं के द्वन्द्व के रूप में किया है ।

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में उन्होंने अनेक ब्राह्मण ग्रंथ के चवैंती चवैंती अर्थात आगे बढ़ो आगे बढ़ो की धारणा को स्वीकार किया है।

डी. पी. मुखर्जी ने प्रगति के विकासवादी सिद्धांत को अस्वीकार किया है और कहा है कि यह कोई प्राकृतिक घटना नहीं है, अपितु मानव के जीवन के उद्देश्य पर आधारित एक विचार है।

डी. पी. मुखर्जी समन्वय वादी विचारधारा के कारण उन्होंने वेदांत पश्चिमी उदारवाद और मार्क्सवाद के संबंध में बल दिया है।

डी .पी . मुखर्जी ने आधुनिकता और परंपरा के अपने विश्लेषण में आधुनिकता के साथ तार्किकता/ युक्तमूलकता (रेशनलटी) के तत्व को नहीं जोड़ा है।

डी .पी. मुखर्जी के अनुसार परंपरा आधुनिकता को नकारती नहीं है। अतः यह दोनों एक दूसरे के सहयोग से पल्लवित होती है।

डी. पी. मुखर्जी ने मूल्यों के संतुलन की समस्या के साथ-साथ परंपरा और आधुनिकता के समन्वय पर जोर दिया है ।

डी . पी . मुखर्जी अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक अध्ययन संस्थान में समाजशास्त्र के अतिथि आचार्य (विजिटिंग प्रोफेसर) के रूप में कार्य किया है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद में भारत की ओर से प्रतिनिधित्व किया और इसके उपाध्यक्ष भी रहे हैं।

सन 1955 में उन्होंने भारतीय समाजशास्त्र परिषद के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की तथा एक अत्यंत विचारोत्तेजक तथा मार्गदर्शक भाषण दिया ।

डी . पी. मुखर्जी ने पश्चिमी अनुभव होता वाद के विचार को अस्वीकार कर भारत के समाजशास्त्र के लिए व्याख्यात्मक पद्धति का समर्थन किया।

प्रमुख कृतियां :-

1-पर्सनैलिटी एंड द सोशल साइंसेज, 1924 ।
2- बेसिक कॉन्सेप्ट इन सोशियोलॉजी, 1932 ।
3- मॉडर्न इंडियन कल्चर ,1942 ।
4 - टैगोर - ए स्टडी ,1943 ।
5 - आन इंडियन हिस्ट्री, 1945 ।
6 - इंट्रोडक्शन टू इंडियन म्यूजिक ,1945 ।
7 - प्रॉब्लम्स आफ इंडियन यूथ, 1946।
8- व्यूज एंड काउन्टरव्यूज, 1946।
9- डायवर्सिटी, 1958।